6

uhfrK pk.kD;

प्रिय शिक्षार्थी, पूर्व पाठ में आपने नैतिक मूल्यों से संबंधित श्लोकों का ज्ञान प्राप्त किया। इस पाठ में आप "नीतिज्ञ चाणक्य" के विषय में पढ़ेंगे। चाणक्य एक उत्तम राजनेता, आदर्शवादी तथा उत्तम नीति निर्माता थे। चाणक्य के जीवन दर्शन तथा कार्य से हम हमारे जीवन में बहुत सी बातें सीख सकते हैं।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- चाणक्य का जीवन तथा जीवन दर्शन जान पाने में;
- राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारीयों का अहसास कर पाने में; और
- संस्कृत के वाक्यों को समझ पाने में।

uhftK pk.kD;

6.1 eyikB & 1

d{kk &VII

fVIi.kh

Hkkjr n'kL; çfl)jktuhfrK% vR;Ur çe[k% pk.kD;%A v; p.kd% bfr d'pu ckã.kL; i=%A vr% pk.kD;% bfr uke vkxreA ;FkkFk : i.k dkfVY;%] fo".kqxqIr% bfr ukeH;k çfl)% vklhrA vL; tUe LFkku ikVyhi=eA v; fØ-i ...%å&„Š... re dkyeku vklhrA

ckY;s pk.kD;% lokiu onku] 'kkL=kf.k p viBrA ij l% uhfr'kkL=e ,o bPNfr LeA vr% rfLeu {ks= çkoh.; lEikfnrokuA vr% jktuhR;k rL; uhfr% Þpk.kD;uhfrß bfr ukEuk çfl)k tkrkA ek;ko'kçFkejkK% pUæxqIrL; egkeU=h vklhrA rL; lkgk¸;su ,o pUæxqIru uUnjkT;e voLFkkfir ek;o'k% LFkkfirA

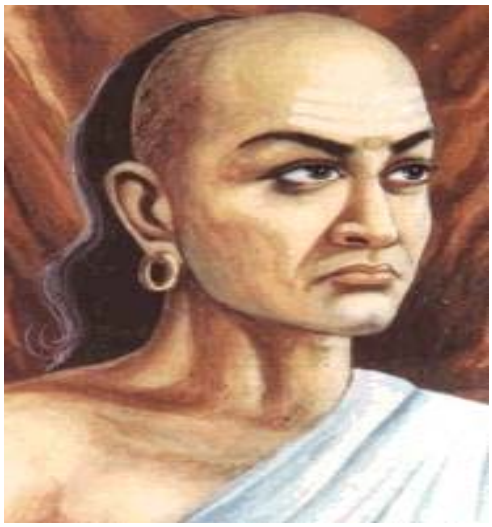

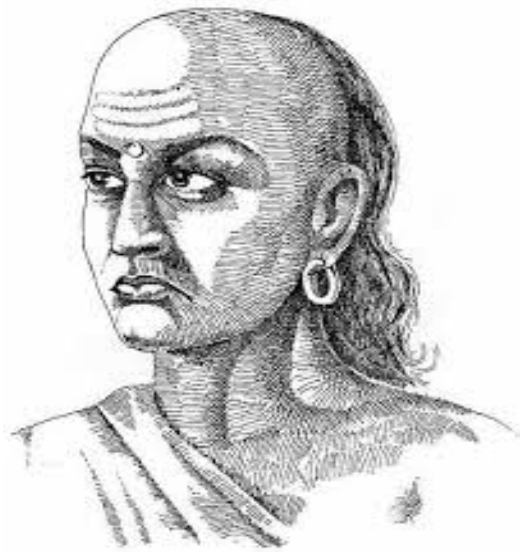

ljykFk &

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य भारत देश के महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। ये

चणक नाम ब्राह्मण के पुत्र थे। इसलिए इनका नाम चाणक्य है। वास्तव में ये कौटिल्य तथा विष्णुगुप्त के नाम से प्रसिद्ध थे। इनका जन्म पाटलीपुत्र (आज का पटना शहर) में हुआ था। इनका समय ई0पु0 370 से ई0पु0 286 के लगभग माना जाता है।

बाल्यकाल में ही चाणक्य ने सभी वेदों तथा शास्त्रों का अध्ययन कर लिया था। परन्तु उन्हें नीतिशास्त्र बहुत पसंद था। इसलिए उस क्षेत्र में उन्होने प्रवीणता हासिल की। इसलिए राजनीति के क्षेत्र में उनका ग्रन्थ "चाणक्यनीति" के नाम से प्रसिद्ध है। वे मौर्य वंश के प्रथम राजा चन्द्रगुप्त के महामंत्री थे। इनके सहयोग से ही चन्द्रगुप्त ने नन्दराज्य को हराकर मौर्यवंश की स्थापना की थी।

6.2 eyikB & 2

çkphudky Hkkjro"k ex/k tuin uUno'kfefr ,d lkekT;e vklhrA ex/klkekT;L; jkt/kkuh ikVyhi=e vklhrA vfLeu lkekT;s cf)eUr% efU=.k] drO;fu"Bk% depkfj.k] x.koUr% ifUMrk] 'kfäeUr% lfudk% p vklUA uxjL; oHkoe vR;R—"Ve vklhrA jkT;s mÙke—f"kdk;Z çpyfr LeA vUr% ukxfjdk% /kfudk% vklUA f'k{k.k0;oLFkk vfi vR;RØ"Vk vklhrA vfLeu ,o jkT;s fo'oçfl)% ÞukyUnk fo'ofo|ky;%ß vklhrA

jkT;s cgfu o"kkf.k ;kor 'kklu0;oLFkk mÙkejhR;k çkpyrA vuUrja uUno'k lehiUu% ?kuuUn% jktk vHkorA l% ijeLokFkh bfUæ;klä% p vklhrA jkT;dk;s rL; #fp% u vklhrA vr% ,o ex/kjkT;s leL;kxLr tkreA rLekr lo ukxfjdk% fpUrkxLr% vHkouA

uhfrK pk.kD;

fVIi.kh

ikVfyi= cf)eku lnx.klEiUu% jk"Vªkä% lo'kkL=ikj³xr% pk.kD;% vfi olfr LeA lo jk"Vªkäk% pk.kD;u lg ijke'kZ —roUr%A pk.kD;% ?kuuUn% ck/kf;r| rL; ldk'k xroku] fdUr| ?kuuUn% dfir% tkr%] l% pk.kD;L; —r vieku efi —rokuA rnkuh ijelkfRod% pk.kD;% uUn lkekT;L fouk'kkf;r| çfrKk —rokuA

l% ,d /khj 'kkL=fui|.k ohj ;|oku n"VokuA rL; uke ^pUæxlr%^ bfrA pk.kD;% pUæxIr vnHkr lkeFk;Z –"VokuA vr% ,o pk.kD;% Locf)dk'kY;u n"Vr ?kuuUnkr jkT;kf/kdkj fgÙok uUno'k ley fouk'; pUæxIrk; ex/kjkT;L nÙkokuA Lo;L pk.kD;% rL; egkekR;% vHkorA pUæxlrL; ijkØe.k pk.kD;L; cf)dk'kyu p ex/kjkT;L iujfi l|[kleF)|;äe vHkorA

vuu jktuhfr'kkL=] /kekZ'kkL=] fof/k'kkL=Ek] vFk'kkL= p vf/k—R; ^vFk'kkL=Ek^ bfr xUFkL; jpuk —rkA rfLeu jktuhfrfo"k;dkfu l=kf.k lfUrA ,o 'kkL=fo'k;|] n'kL; j{k.k& lo/kufo"k;L p lo'kk ekxn'kd% tkr%A

ljykFk &

प्राचीन काल में भारत में मगध जनपद पर नंदवंश नामक एक साम्राज्य था। मगधसाम्राज्य की राजधानी पटना थी। इस साम्राज्य में बुद्धिमान मंत्री, कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी/सेवक, गुणी विद्वान तथा बलशाली सैनिक थे। नगर का वैभव उच्च कोटि का था। राज्य में कृषिकार्य उत्तम अवस्था में थे। इसलिए सभी नागरिक सम्पन्न थे। शिक्षा—व्यवस्था भी उत्कृष्ठ अवस्था में थी। इसी साम्राज्य में विश्व प्रसिद्ध नालान्दा विश्वविद्यालय था।

राज्य में बहुत वर्षों तक यह शासनव्यवस्था उत्तम नीति से चलती रही। कुछ समय पश्चात नंद वंश में घनानंद नामक राजा हुआ। वह बहुत ही स्वार्थपरायण तथा इन्द्रियासक्त था। राज–कार्य मे उसकी रूचि नही थी। इसलिए मगध साम्राज्य समस्या ग्रस्त हो गया। उसके सभी नागरिक चिंता में थे।

पाटलिपुत्र नगर में बुद्धिमान, सर्वगुणसम्पन्न, राष्ट्रभक्त और सभी शास्त्रों के ज्ञाता चाणक्य भी रहते थे। सभी राज भक्त चाणक्य के साथ परामर्श करते रहते थे। घनानंद को समझाने के लिए चाणक्य उसके सामने गया परंतु घनानंद गुस्से में हो गया और उसने चाणक्य का अपमान कर दिया। उसी समय पर सात्विक चाणक्य ने नंद साम्राज्य के विनाश करने की प्रतिज्ञा ले ली।

उसने एक धीरललित, शास्त्रों में निपुण वीर युवक को देखा। उनका नाम चन्द्रगुप्त था। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त में अद्भूत सामर्थ्य देखा था। इसलिए चाणक्य ने अपनी बुद्धि–कौशल से दुष्ट घनानंद के अधिकार से राज्य को छीनकर नंदवंश का सम्पूर्ण विनाश करके चन्द्रगुप्त को मगध का राज्य दे दिया। स्वयं चाणक्य उसका महामंत्री बना। चन्द्रगुप्त के पराक्रम से तथा चाणक्य के बुद्धि–कौशल से मगधसाम्राज्य फिर से सुख–समृद्धि से युक्त हो गया।

चाणक्य के बुद्धि–कौशल से मगधसाम्राज्य फिर से सुख–समृद्धि से युक्त हो गया।

इनके द्वारा राजनीति शास्त्र, धर्मशाला विधि शास्त्र और अर्थशास्त्र को आधार बनाकर "अर्थशास्त्र" नामक ग्रन्थ की रचना की गई। इसमें

uhftK pk.kD;

d{kk &VII

fVIi.kh

राजनीति से संबंधित सूत्र है देश की रक्षा तथा विकास के विषय में यह शास्त्र मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है।

ikBxr iz'u& 6-1

1. नीचे दिये गये प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर कीजिए–

   i. चाणक्यस्य पिता कः ?

   ii. चाणक्यस्य जन्मस्थानं किम् ?

   iii. कस्मिन् क्षेत्रे अस्य प्रावीण्यमासीत् ?

   iv. चाणक्येन दृष्टः शास्त्रनिपुणः वीरः कः ?

   v. मगधजनपदे विद्यमानस्य साम्राज्यस्य नाम किम् ?

vkius D;k lh[kk\

- चाणक्य का व्यक्तित्व।
- मगध साम्राज्य के बारे में ऐतिहासिक जानकारी।
- भूतकाल के वाक्यों का प्रयोग।

ikBkr iz'u

1. चाणक्य की जीवन के विषय में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2. घनानंद से पूर्व मगध साम्राज्य की स्थिति कैसी थी?

d{kk &VII

fVIi.kh

mÙkjekyk

6.1

I

i. चणकः

ii. पाटलिपुत्रम्

iii. नीतिशास्त्रे

iv. चन्द्रगुप्तः

v. नन्दसाम्राज्यम्